भक्ति अनन्य होनी चाहिए। भक्त को केवल ईश्वर पर निर्भर रहना है। पूरी तरह से केवल भगवान पर ही भरोसा करना है। किसी और से किसी भी व्यक्ति या वस्तु का सहारा नहीं लेना है। हमेशा केवल भगवान के सहारे रहना हैं। चूंकि ईश्वर आपको सलाह नहीं दे सकता, इसलिए आपको एक वास्तविक संत या उसके उपदेश के अनुसार चलना हैं।

लोगों की सभी प्रकार के स्वर्गीय इंद्र, कुबेर आदि देवी देवताओं की पूजा करने की आदत है। विभिन्न मंत्रों का जप करना, सभी मंदिरों से आशीर्वाद मांगना इससे अनंत आनंद वाला काम नही बनेगा बल्कि बिगड़ जायेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान श्रीकृष्ण कहते है, जो कोई केवल मेरी ही शरण में आता है वही माया से उत्तीर्ण हो सकता है। अनन्यता परमावश्यक है। इसी अनन्यता का पाठ पढ़ाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्र की पूजा बंद कर के दिखाया था कि अनन्य भाव से मेरी भक्ति करनी है।

भगवान के सभी पहलुओं का विस्तार अनंत है। उनके पास अनंत रूप हैं। सभी रूपों में एक ही शक्ति होती है लेकिन जितनी जरूरत है उतनी ही शक्ति प्रकट होती है। हमें एक रूप का चयन करना चाहिए और उसी की भक्ति करनी चाहिए। उदाहरण के लिए श्रीकृष्ण। अगर भगवान किसी अन्य रूप में हमारे पास आते है तो हमें उनका स्वीकार नहीं करना है।

एक बार रास का दिव्य नृत्य हो रहा था, जिसमें गोपियां, राधा और श्रीकृष्ण सम्मिलित थे। यह एक दिव्य रस से

भरा माहौल था जिसमें गोपियों को दिव्य जगत का सर्वोच्च रस मिल रहा था। भगवान श्रीकृष्ण ने जितनी गोपियां थी उतने रूप धारण किये थे। श्रीकृष्ण गोपियों के ताल पर नृत्य कर गोपियों को रिझा रहे थे। गोपियों की सुंदरता आदि की तारीफ कर रहे थे। हर एक गोपी को यही लग रहा था कि श्रीकृष्ण केवल उसके साथ है। गोपियों ने सोचना शुरू कर दिया, 'मुझे देखो। मैं बहुत सुंदर, आकर्षक और मोहक हूं कि यहां तक कि भगवान स्वयं मेरे सौंदर्य पर मंत्रमुग्ध हो गये है। वह मेरे ताल पर नृत्य कर रहे है और मेरे प्यार में फंस गये है। '

श्रीकृष्ण जो हर किसी के मन की बात को जानते है, गोपियों का अहंकार देखकर रास से गायब हो गये। श्रीकृष्ण को खोने पर, गोपियां पूरी तरह से व्यथित थी, जैसे कि उनके जीवनकाल का पूरा खजाना खो गया हो। वे बुरी तरह से रो रही थी और पागल सी हो गयी थी। उन्होंने श्रीकृष्ण की प्रार्थना की और उन्हें फिर से वापस आने की विनती की। वे वृंदावन के जंगल में हर जगह श्रीकृष्ण को खोज रहीं थी। राधा भी बाद में गोपियों में शामिल हो गई।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

तब श्रीकृष्ण फिर से प्रकट हुए, अपने सामान्य रूप में नहीं बल्कि भगवान विष्णु के रूप में। सभी ऐश्वर्य के साथ चार हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म लिए। गोपियां जो अस्तव्यस्त कपड़ों में थी, उन्होंने कपडे तुरंत ठीक करने की कोशिश की और भगवान से पूछा, 'आप कौन हैं और आप हम सभी महिलाओं के बीच में क्यूं आये हैं?'

भगवान ने कहा, 'तुम मुझे दुःखी हो कर पुकार रही थी, तो मैं यहाँ हूँ! मैं भगवान विष्णु हूं।' गोपियों में से कोई

भी उनके पास नहीं गयी। गोपियों में से एक ने कहा, 'अगर यह व्यक्ति भगवान है तो हम परीक्षण करें'। उन्होंने कहा, 'यदि आप सही में भगवान हैं, तो कृपया हमें हमारे प्यारे श्रीकृष्ण वापस लौटा दीजिए जो हमें इस अवस्था में छोड़ गये है। हम सब उनसे प्यार करती हैं और उनके बिना नहीं रह सकती। ' श्रीकृष्ण को अपने प्यारे और सुंदर रूप में आना पडा। गोपियां आनन्दित हो गयी और रास फिर से शुरू हो गया।

द्रौपदी की कहानी भी इस बात को दर्शाती है। जब उसका वस्त्र छीन लिया जा रहा था तो उसने पहली बार सोचा कि उसके शक्तिशाली पति उसको बचाएंगे, फिर उसने दरबार में उपस्थित मान्यवरों को मदद के लिए पुकारा, जिसके बाद उसने अपने दात से सारी दबायी यानी अपनी ताकत पर भरोसा किया, तब भी भगवान नही आये। आखिर दोनो हाथ फैला के जब उसने अनन्य भाव से केवल भगवान पर निर्भर होकर उन्हे पुकारा, तब अंबरावतार हुआ और द्रौपदी की रक्षा हुई। बगैर अनन्यता के काम नही बनेगा।